निबंध - जिनशासन की प्रभावना हेतु वर्तमान में संचालित पाठशाला को कैसे सुव्यस्थित करें।

1. पाठशाला का उद्देश्य — पाठशाला का उद्देश्य बच्चों एवं साधर्मी भाई-बहनों में धर्म के प्रति राग, धर्म मार्ग पर चलकर चरित्रवान एवं संस्कारवान बनाना है, धार्मिक शिक्षा मनुष्य का सम्यक उत्थान करती है एवं शिष्ट आचरण अच्छे बुरे की पहचान करना सिखाती है पाठशाला से तात्पर्य है कि धर्म शिक्षा को ग्रहण कर मनुष्य द्वारा सही अर्थ में अपनी क्षमताओं का उपयोग करना सिखाना; अज्ञान (अधर्म) के अंधकार से निकलकर ज्ञान के प्रकाश की ओर बढ़ना सिखाना। और सम्यक ज्ञान के प्रकाश में जीवन का सर्वांगीण विकास कर सकता है। पर वर्तमान में आधुनिक शिक्षा प्रणाली - पद्धति बच्चों द्वारा अनुकरण करने के कारण हम (साधर्मी भाई-बंधु, बच्चे) शिक्षा एवं संस्कृति को भूल रहे हैं और पतन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इसलिए उनको इस पतन से बचाने के लिए उन्हें धर्म मार्ग पर अग्रसर चलने के लिए प्रेरित करना चाहिए और ये संभवतः हम पाठशाला के द्वारा ही कर सकते हैं।

2. पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएँ → पाठशाला के अध्यापक की निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए -

① आधुनिक शिक्षा में कम से कम 12वी पास उत्तीर्ण होकर हम स्कूली शिक्षा का ज्ञान देते हैं। या किसी बच्चे को स्कूल या ट्यूशन में पढ़ाने के लिए आवश्यक है इसी तरह पाठशाला में ज्ञान का

ज्ञान देने लिए कम से कम 12 वर्षीय धार्मिक शिक्षा का ज्ञान होना आवश्यक है, अध्यापक को हिंदी, संस्कृत भाषा ज्ञान होना चाहिए एवं पाठशाला पढ़ाने के पहले स्वयं ~~उनके~~ पाठ्यक्रम को पढ़कर उसका अध्ययन कर उससे संबंधित प्रश्न-उत्तर अपनी नोट बुक में लिखना चाहिए, अध्यापक में शालीनता, मधुरवाणी, शिष्टाचार, मैत्री भाव, चारित्रवान, राग-द्वेष त्यागकर बच्चों को ज्ञान दान देना चाहिए, समय का पाबंद होना चाहिए जिससे हम बच्चों को भी समय की कीमत समझा सके साथ-ही-साथ अध्यापक को धार्मिक कथा, धार्मिक संस्मरण आदि याद होना चाहिए ताकि बच्चों को समझाकर पढ़ा सके एवं सभी से एकसमानता का व्यवहार कक्षा में करें।

3. वर्तमान समयनुसार किस पद्धति से बच्चों को पढ़ाया जाये → हमेशा पाठ्यक्रम निर्धारित लघु होना चाहिए ताकि उसे बच्चों को संक्षेप में सरलता-पूर्वक समझाया जा सके, बच्चों को धार्मिक कहानियाँ, संस्मरण, जैन नारे, दोहे ज्ञानोपयोग के भेद-~~प्रभेद~~ प्रभेद, संस्कृत-पाठ का शुद्ध उच्चारण सिखाना, अर्थ ज्ञान याद करवाके, छोटे बच्चों को कापी बनवाकर उसमें मुख से बोलकर या ब्लेकबोर्ड पर लिखवाकर बच्चों बार-बार बोलकर याद करवाना चाहिए, आजकल आधुनिक युग में यह सब कम्प्यूटर या मोबाइल पर नेट सुविधा द्वारा शिक्षा दे सकते हैं, विद्यार्थियों को पाठशाला के प्रति आकर्षण पैदा करवाना भी जरूरी है जिससे वे पाठशाला अपनी

नाम - श्रीमती अनिता W/O मनोज जैन
विद्यासागर स्टेशनरी मार्ट, कटरा
सागर, 9424445080

रात्रि से आकर धर्म लाभ ले। पाठशाला में सर्वप्रथम बच्चों के संकल्प पत्र भरवाकर, रंग पुस्तक पेन फिर प्रदान करें। शनिवारिय बाल सभा में कहानी, गेम खिलवाकर उससे संबंधित प्रश्नों को पूछे या उसके किरदार बनवाकर बाल सभा को रोचक बनवा सकते है। प्रत्येक रविवार पूजन ~~में~~ बच्चों को पूजन मे ब्राह्मी, सुंदरी, भरत - बाहुबली पात्र बनवाकर सामुहिक पूजन बच्चों द्वारा माइक से करवाये। फिर प्रभावना शैली द्वारा एक परिवार की ओर से स्वल्पाहार का कार्यक्रम रखे, साल मे एक तीर्थ यात्रा पर जाये हर साल परिक्षा होने पर बच्चो को पाठशाला से प्रमाणपत्र, पुरस्कार, एवं जो बच्चें रोज कक्षा मे आते है उनका सम्मान बच्चों के परिवारजन के साथ सम्मानित करें। हर महीने बच्चो के जन्म दिन को एक साथ सभी बच्चों ~~के साथ~~ के साथ महीने के अंत मे शनिवार को एक स्लोगन के साथ ताली बजाकर ~~मनाये~~ मनाये

जैसे - "सागर से एक लहर निकली तेरे नाम की तुझे मुबारक हो खुशियाँ इस संसार की"

बच्चो को हिंदी की गिनती, स्तुतियाँ, मुक्तक, हाइकु आदि याद करवाकर रोज प्रार्थनास्थल पर प्रति दिन बच्चों से बुलवाये, एवं बच्चों की योग्यता देखकर शिक्षक को पढाना चाहिए, कभी-कभी बच्चों को कक्षा के शिक्षक ~~बन~~ पढाने का मौका देकर उन्हे खुशी देनी चाहिए एवं बच्चों से ही कलश स्थापना करवाना चाहिये।